B.A. 2 (Hons) SUB

29.4.20

बौद्ध दर्शन - अष्टांगिक Philosophy

अष्टांग मार्ग

दुःख-निरोध मार्ग

महात्मा बुद्ध की शिक्षा का सार उनके चार आर्य सत्यों में समाहित है। दुःखों का निरोध तृतीय आर्य सत्य में बतलाया गया है, लेकिन दुःखों का निरोध किस प्रकार संभव है इस प्रश्न का उत्तर चतुर्थ आर्य सत्य में बतलाया गया है और इस मार्ग को दुःख निरोध मार्ग कहा गया है। इस मार्ग में दुःखों का अन्त बतलाया गया है और मनुष्य मार्ग पर चलकर व्यक्ति निर्वाण को प्राप्त करता है। इस मार्ग को अष्टांगिक मार्ग कहा जाता है।

(1) सम्यक् दृष्टि - बुद्ध ने दुःख का मूल कारण अविद्या को माना है। बुद्ध का कहना है कि "Ignorance is the sole Cause of Suffering" इसलिए दुःख को दूर करने के लिए अविद्या का नाश एवं ज्ञान प्राप्त आवश्यक है। इसलिए बुद्ध ने कहा है कि दुःख दूर करने के लिए मिथ्या दृष्टि को दूर करना है। मिथ्या दृष्टि का अन्त सम्यक् दृष्टि से ही ~~से~~ ही संभव है।

(2) सम्यक् संकल्प — बुद्ध का कहना है कि केवल सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करने से निर्वाण की प्राप्ति नहीं है। कल्याणकारी इसके लिए दृढ़ संकल्प होकर अपने

की ओर बढ़ना पड़ेगा। निर्वाण प्राप्ति के लिए व्यक्ति को इन्द्रियों के विषयों से अलग रहने दूसरे के प्रति द्वेष तथा हिंसा के विचारों को त्याग करने का संकल्प ही सम्यक् संकल्प है। इसमें त्याग और परोपकार की भावना सन्निहित है।

3) सम्यक् वाक् — सम्यक् वाक् सम्यक् संकल्प की अभिव्यक्ति है। इसमें अपने वचन पर नियंत्रण रखना होगा। झूठ, निन्दा तथा अप्रिय वचन से बचना होगा। अपने जीवन के लिए आदर्श विचारों को बोलकर नहीं प्रकट करना चाहिए। आवश्यकता से अधिक नहीं बोलना चाहिए।

4) सम्यक् कर्म — महात्मा बुद्ध का कहना है कि सत्य भाषी और प्रिय भाषी के साथ आदर्श कर्म भी करना चाहिए। व्यक्ति के पतन का कारण वही होता है इसलिए सदैव सम्यक् कर्मों का पालन जरूरी करना है। साधक को इन्द्रियों को वश में करना अहिंसा, इन्द्रिय संयम, अस्तेय आदि भी सम्यक् कर्म है।

5) सम्यक् आजीविका — बुद्ध ने इसका तात्पर्य ईमानदारी से जीविका पालन करना बतलाया है। इनके अनुसार साधक को रिश्वत, व्यापार, लूट, भ्रष्टाचार आदि बुरे कर्मों को जीवन-निर्वाह का साधन नहीं बनाना चाहिए।